##  BEING

- NOWV SERIES DH THEE STOAR.

SAINT JƠHN, TUESDAY, MARCH 24, 1829.

|  |  |
| :---: | :---: |
|  |  |
|  |  |
|  |  |
|  |  |
|  |  |
|  |  |
|  |  |
|  |  |
|  |  |
|  |  |
|  |  |
|  |  |
|  |  |
|  |  |
| to illustrate which work, he constructed an admirable model of an ancient galley, which is now placed in the |  |
|  |  |
|  |  |
|  |  |
|  |  |
|  |  |
|  |  |
|  |  |
|  |  |
|  |  |
|  |  |
|  |  |
|  |  |
|  |  |
|  |  |
|  |  |
|  |  |
|  |  |
|  |  |
|  |  |
|  |  |
|  |  |
|  |  |
|  |  |
| eepiog on its sur- |  |
| $\begin{aligned} & \text { face, I felt in iny heart, it is good to be bere, - Bishop } \\ & \text { Anecpore- A faithfol and godiy, though } \end{aligned}$ |  |
|  |  |
| ly preached in a certain country, once relatedthe following anecdote to his haers, to ilustrate a discourse which he had been deliver |  |
|  | boad |
|  |  |
|  |  |
|  |  |
|  |  |
|  |  |
|  |  |
| ding tomards the glas, when some one 1iterro- |  |
|  |  |
|  |  |
|  |  |
|  |  |
|  |  |
| sau in the glo | Thus |
|  |  |
|  |  |
|  |  |
|  |  |
|  |  |
|  |  |
|  | ; |
|  | pre |
|  |  |
|  |  |
|  |  |
|  |  |
|  |  |
|  | be dangeros |
|  |  |
|  |  |
|  |  |
|  |  |
|  |  |
|  |  |
|  |  |
|  |  |
|  |  |
|  |  |
|  |  |
|  |  |
|  |  |
|  |  |
|  |  |
|  |  |
|  |  |
|  |  |
|  |  |

